अध्याय 7: मैं और मेरा देश

विषय-सूची 7 प्रश्नावली · 21 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)	6 प्रश्न
प्रश्नावली 7.2	मेरे शब्द मेरे विचार	3 प्रश्न
प्रश्नावली 7.3	मेरे अनुभव मेरे विचार	6 प्रश्न
प्रश्नावली 7.4	विधा से संवाद — निबंध की विशेषताएँ	2 प्रश्न
प्रश्नावली 7.5	व्याकरण की बात — संदर्भ में शब्द	2 प्रश्न
प्रश्नावली 7.6	शब्दों की कड़ियाँ — उपसर्ग और प्रत्यय	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.7	शब्द-संपदा (शब्दार्थ मिलान)	1 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)

प्रश्न 1

"एक दिन आनंद की इस दीवार में दरार पड़ गई", इस पंक्ति में रेखांकित शब्द 'दरार' किस ओर संकेत करता है? (क) पूर्णता के भाव की तुष्टि (ख) पारस्परिक संबंध टूटने की स्थिति (ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार (घ) सुख-सुविधाओं का अभाव

हल

सही उत्तर: (ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार।

निबंध में लेखक बताता है कि वह घर, पड़ोस, नगर सबसे मिलकर पूर्ण मनुष्य बन गया था। यह आनंद की 'दीवार' थी।

'दरार' तब पड़ी जब उसे एहसास हुआ कि देश गुलाम है और इस गुलामी की लाज हर जगह उसके माथे पर चिपकी है। अर्थात् व्यक्तिगत पूर्णता का भाव (आनंद) चकनाचूर हो गया — यह पूर्णता के भाव पर प्रहार था। पारस्परिक संबंध (ख) का प्रश्न नहीं था; सुख-सुविधाओं का अभाव (घ) भी कारण नहीं था।

उत्तर: (ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार — लालाजी के अनुभव ने लेखक की उस पूर्णता की भावना को तोड़ दिया जो उसे घर-पड़ोस-नगर से मिली थी।

प्रश्न 2

निबंध में कहा गया है कि "ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है।" लेखक को किस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद की अनुभूति होती है? (क) बात को विस्तार देने वाले प्रश्नों का (ख) बात का निष्कर्ष प्रस्तुत करने वाले प्रश्नों का (ग) बिना किसी संदर्भ के पूछे गए प्रश्नों का (घ) किसी की समझ का आकलन करने वाले प्रश्नों का

हल

सही उत्तर: (क) बात को विस्तार देने वाले प्रश्नों का।

लेखक लिखता है — 'बड़े महत्त्व का प्रश्न है। इस अर्थ में भी कि यह बात को खिलने का, आगे बढ़ने का अवसर

देता है।' अर्थात् वे प्रश्न जो बात को और विस्तृत रूप से खोलने का मौका देते हैं, उनका उत्तर देने में लेखक को आनंद आता है।

निष्कर्ष प्रस्तुत करने वाले प्रश्न (ख) इसके विपरीत बात को समेटते हैं, विस्तारित नहीं करते।

उत्तर: (क) बात को विस्तार देने वाले प्रश्नों का — जो प्रश्न विचार को आगे बढ़ाने और खिलने का अवसर देते हैं।

प्रश्न 3

"अपने समान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए", इस वाक्य में पराधीनता के दिनों को दीन कहा गया है क्योंकि पराधीन भारत में— (क) भोजन, आवास और वस्त्र जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव था। (ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था। (ग) महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने की स्वतंत्रता थी। (घ) धार्मिक रीति-रिवाजों को मनाने पर रोक लगाई जाती थी।

हल

सही उत्तर: (ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था।

लालाजी का अनुभव यही था — 'जहाँ भी मैं गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।' देश गुलाम होने पर व्यक्ति को गौरव नहीं मिलता, चाहे उसके पास सारे सुख-साधन हों।

पराधीनता 'दीन' इसीलिए है — आत्मसम्मान और गौरव की भावना कुचली जाती थी।

भोजन-आवास (क) या धार्मिक रोक (घ) निबंध का विषय नहीं है।

उत्तर: (ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था।

प्रश्न 4

निबंध के अनुसार मनुष्य साधन-संपन्न होते हुए भी गौरव का अनुभव नहीं कर सकते यदि— (क) उन्हें विदेश भ्रमण के अवसर न मिलें। (ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन हो। (ग) उनके नगर की शासन प्रणाली कमज़ोर हो। (घ) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन होता हो।

हल

सही उत्तर: (ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन हो।

लालाजी का अनुभव निबंध का मूल सूत्र है: 'यदि किसी मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों, पर उसका देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में नीच हो तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।'

विदेश भ्रमण (क), शासन प्रणाली (ग), या अभिव्यक्ति (घ) — निबंध इनकी बात नहीं करता।

उत्तर: (ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन हो — पराधीन देश का नागरिक कभी सच्चे गौरव का अनुभव नहीं कर सकता।

प्रश्न 5

"पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है", इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'गाँठ' किन दो बातों को साथ बाँधती है? (क) देश और नागरिक (ख) देश और संविधान (ग) देश और विदेश (घ) व्यवसाय और आजीविका

हल

सही उत्तर: (क) देश और नागरिक।

निबंध का मूल विचार यही है कि व्यक्ति (नागरिक) और देश अलग नहीं हैं — 'मैं और मेरा देश' एक हैं।

दो घटनाओं (स्वामी रामतीर्थ और कमालपाशा की घटनाएँ) में यही दर्शाया गया है कि नागरिक का कार्य देश की पहचान से जुड़ा होता है।

'गाँठ' का अर्थ है वह बंधन जो नागरिक और देश को जोड़ता है।

उत्तर: (क) देश और नागरिक — 'गाँठ' उस अटूट बंधन की ओर संकेत करती है जो व्यक्ति को उसके देश से जोड़ती है।

प्रश्न 6

प्रस्तुत निबंध में मुख्यतः कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है? (क) लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था (ख) पारिवारिक संबंधों का महत्त्व (ग) व्यक्ति और देश का अंतःसंबंध (घ) देश का महत्त्व और व्यक्ति की उपेक्षा

हल

सही उत्तर: (ग) व्यक्ति और देश का अंतःसंबंध।

निबंध का शीर्षक ही 'मैं और मेरा देश' है जो इस केंद्रीय विचार को स्पष्ट करता है।

लेखक बताता है कि व्यक्ति का सम्मान और देश का सम्मान एक-दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हैं — न व्यक्ति देश से अलग है, न देश व्यक्ति से।

व्यक्ति की उपेक्षा (घ) नहीं, बल्कि व्यक्ति और देश दोनों की महत्ता का समन्वय इस निबंध का मूल भाव है।

उत्तर: (ग) व्यक्ति और देश का अंतःसंबंध — व्यक्ति की पूर्णता और देश का गौरव एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

प्रश्नावली 7.2 — मेरे शब्द मेरे विचार

प्रश्न 1

स्वामी रामतीर्थ जल देने वाले युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध क्यों हो गए?

हल

स्वामी रामतीर्थ जब जापान में थे तो उन्होंने एक युवक से फल माँगे। युवक ने फल दे दिए।
जब स्वामीजी ने उस फल का मूल्य चुकाना चाहा तो युवक ने मूल्य के रूप में भारत की किसी नदी का जल माँगा।
युवक के इस उत्तर ने स्वामीजी को मुग्ध कर दिया क्योंकि एक विदेशी युवक ने भारत की पवित्र नदियों का इतना आदर किया कि उनका जल ही सबसे मूल्यवान वस्तु लगी।
इस उत्तर से स्पष्ट होता है कि भारत का गौरव और उसकी पहचान सुदूर देशों तक फैली है — व्यक्ति के कार्य और देश की प्रतिष्ठा साथ-साथ चलती है।

उत्तर: जापानी युवक ने फल का मूल्य भारत की किसी पवित्र नदी के जल के रूप में माँगा — एक विदेशी द्वारा भारत को इतना सम्मान देना स्वामीजी को भाव-विभोर कर गया।

प्रश्न 2

जापान के युवक ने स्वामी रामतीर्थ को दिए गए फलों के मूल्य के रूप में क्या माँगा? आपके मन में उस युवक के व्यक्तित्व की कौन-सी छवि उभरती है, यह भी लिखिए।

हल

जापानी युवक ने फलों के मूल्य के रूप में भारत की किसी पवित्र नदी का जल माँगा।
यह मूल्य किसी भौतिक वस्तु या धन से कहीं अधिक भावनात्मक और सांस्कृतिक था।
इस युवक के व्यक्तित्व की छवि: वह एक संवेदनशील, भारतीय संस्कृति का आदरकर्ता और भारत की आध्यात्मिक महत्ता को जाननेवाला व्यक्ति प्रतीत होता है।
वह भौतिक वस्तु की बजाय एक पवित्र प्रतीक को अधिक मूल्यवान समझता है — यह उसकी विनम्रता, आदर-भाव और गहरी सांस्कृतिक दृष्टि का परिचायक है।

उत्तर: युवक ने भारत की पवित्र नदी का जल माँगा; वह एक भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का प्रशंसक, संवेदनशील और सांस्कृतिक दृष्टि संपन्न व्यक्ति था।

प्रश्न 3

"बात यह नहीं कि मैं और मेरा देश दो अलग चीज़ तो हैं ही नहीं।" स्वयं को देश से अलग न मानने के पीछे क्या तर्क हो सकते हैं, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

हल

लेखक का तर्क है कि व्यक्ति का निर्माण उसके परिवार, पड़ोस, नगर और देश से होता है; इसलिए वह देश से अलग नहीं है।
तर्क 1: देश की पहचान = व्यक्ति की पहचान — लालाजी जहाँ भी गए, भारत की गुलामी का कलंक उनके माथे

पर था; अर्थात् देश की स्थिति व्यक्ति की प्रतिष्ठा तय करती है।

तर्क 2: नागरिक के कार्य से देश का गौरव — कमालपाशा ने जब मिट्टी से हिंदी में 'वंदे मातरम्' लिखा देखा तो उन्होंने उस युवक की सराहना की; एक नागरिक के कार्य ने देश का नाम ऊँचा किया।

उदाहरण: एक खिलाड़ी जब विदेश में पदक जीतता है तो वह 'भारतीय' के रूप में जाना जाता है; उसकी जीत भारत की जीत बन जाती है — व्यक्ति और देश अलग नहीं हैं।

उत्तर: व्यक्ति का व्यक्तित्व देश की धरती, संस्कृति और नागरिकों के सहयोग से निर्मित होता है; इसलिए व्यक्ति की सफलता-असफलता, गौरव-अपमान सब देश से जुड़े हैं — दोनों अविभाज्य हैं।

प्रश्नावली 7.3 — मेरे अनुभव मेरे विचार

प्रश्न 1

"देश की नीचता और गौरव का ही फल उसे नहीं मिलता, उसकी नीचता और गौरव का फल भी उसके देश को मिलता है", अपने आस-पास के विभिन्न उदाहरणों के द्वारा इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

हल

पंक्ति का भाव: व्यक्ति और देश का संबंध दोतरफा है — देश का गौरव/पतन व्यक्ति को प्रभावित करता है और व्यक्ति का कार्य देश की प्रतिष्ठा को।

उदाहरण 1 (देश का फल व्यक्ति को): पराधीन भारत में लालाजी चाहे जहाँ जाते, 'भारत की गुलामी की लज्जा का कलंक' उनके माथे पर लगा रहता — देश की नीचता का फल व्यक्ति को मिला।

उदाहरण 2 (व्यक्ति का फल देश को): कमालपाशा ने एक भारतीय युवक के देशप्रेम (मिट्टी पर 'वंदे मातरम्' लिखना) को देखकर उसकी प्रशंसा की — एक नागरिक के कार्य ने देश का गौरव बढ़ाया।

आस-पास के उदाहरण: किसी खिलाड़ी का विदेश में अनुचित आचरण करने पर पूरे देश की छवि खराब होती है; वैज्ञानिक की उपलब्धि पर पूरा देश गौरवान्वित होता है।

उत्तर: व्यक्ति के कार्य-व्यवहार से देश की प्रतिष्ठा बनती-बिगड़ती है और देश की स्थिति (स्वतंत्र या पराधीन) का प्रभाव व्यक्ति के सम्मान पर पड़ता है — दोनों एक-दूसरे के लिए उत्तरदायी हैं।

प्रश्न 2

"मुझे बहुतों की अपने लिए ज़रूरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की ज़रूरत का उनके लिए जवाब था।" (क) प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक आप अपने किन-किन कार्यों में किन-किनका क्या सहयोग लेते हैं और आप दूसरों को किस तरह का सहयोग देते हैं? अपने अनुभव लिखिए। (ख) उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द 'बहुतों' में कौन-कौन सम्मिलित होंगे, अनुमान के आधार पर लिखिए। (ग) रचनाकार को स्वयं के लिए दूसरे लोगों से किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता पड़ती होगी और वह दूसरों को किस प्रकार का सहयोग देता होगा, अनुमान के आधार पर लिखिए।

हल

(क) प्रातःकाल से रात्रि तक हम किसान का उगाया अन्न खाते हैं, दूधवाले का दूध पीते हैं, वाहन चालक की सेवा लेते हैं, चिकित्सक से उपचार पाते हैं — इस प्रकार अनेक लोगों का सहयोग लेते हैं।

(क) बदले में हम विद्यार्थी के रूप में पढ़-लिखकर भविष्य में अपनी सेवाएँ दे सकते हैं; घर के बड़ों की सहायता करते हैं; अपने मित्रों और पड़ोसियों की मदद करते हैं।

(ख) 'बहुतों' में परिवार के सदस्य, पड़ोसी, किसान, कारीगर, व्यापारी, शिक्षक, चिकित्सक, सफाईकर्मी, पुलिसकर्मी — वे सभी लोग सम्मिलित हैं जो समाज को गतिशील बनाते हैं।

(ग) रचनाकार को पाठकों की प्रतिक्रिया, प्रकाशक का सहयोग, पुस्तकालय की सुविधाएँ, घर चलाने के लिए किसान-कारीगरों का सहयोग चाहिए। बदले में वह अपनी लेखनी से समाज को विचार, प्रेरणा और जागरूकता देता है।

उत्तर: हम प्रतिदिन अनेक लोगों पर निर्भर हैं (अन्नदाता, चिकित्सक, शिल्पी आदि) और हम भी अपनी क्षमता से दूसरों के काम आते हैं — यही पारस्परिक निर्भरता सामाजिक जीवन की नींव है।

प्रश्न 3

"सुना नहीं आपने कि जीवन एक युद्ध है और युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता।" (क) उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित अंश "युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता" के आधार पर लिखिए कि देश की प्रगति, विकास एवं सुरक्षा के प्रति हम सभी के क्या-क्या दायित्व हैं? अपने उत्तर को विस्तार देने के लिए अपने घर या पास-पड़ोस के बड़ों और अध्यापक से चर्चा करके लिखिए। (ग) इस निबंध में जीवन को युद्ध क्यों कहा गया है?

हल

(क) युद्ध में केवल सैनिक ही नहीं लड़ता — पीछे किसान अन्न उगाता है, कारखानेदार हथियार बनाता है, नर्स घायलों की सेवा करती है, नेता मनोबल बढ़ाता है।

(क) इसी प्रकार देश की प्रगति में — किसान का दायित्व है अधिक उत्पादन; वैज्ञानिक का दायित्व है नई खोज; शिक्षक का दायित्व है ज्ञान का प्रसार; नागरिक का दायित्व है ईमानदारी, स्वच्छता और कानून का पालन।

(क) हर व्यक्ति अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करके देश को बलशाली बना सकता है — यही देश-सेवा का विस्तृत अर्थ है।

(ग) जीवन को युद्ध इसलिए कहा गया है क्योंकि युद्ध की तरह जीवन में भी संघर्ष, चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ निरंतर आती रहती हैं। जिस प्रकार युद्ध में अनेक प्रकार के कार्य होते हैं — लड़ना, खाद्य-आपूर्ति, चिकित्सा, रणनीति — उसी प्रकार जीवन के विशाल समुद्र-तट पर हर व्यक्ति अपने लिए स्थान पाता है और अपना योगदान देता है।

उत्तर: (क) देश की प्रगति के लिए हर नागरिक — चाहे किसान हो, वैज्ञानिक हो, शिक्षक हो या श्रमिक — अपने-अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने का दायित्व रखता है। (ग) जीवन को युद्ध कहा गया क्योंकि दोनों में संघर्ष है, दोनों में अनेक भूमिकाएँ हैं और हर व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार योगदान दे सकता है।

प्रश्न 4

"अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।" (क) उपर्युक्त पंक्ति के आधार पर लिखिए कि पास-पड़ोस के लोगों में किस तरह के पारस्परिक संबंध रहे होंगे? (ख) वर्तमान समय में ऐसे संबंधों में किस तरह के परिवर्तन आए हैं और इसके क्या कारण हो सकते हैं? लिखिए।

हल

(क) पड़ोसियों में ममता, दुलार और सहयोग का वातावरण था। बच्चे एक-दूसरे के घर में खेलते थे; बड़े एक-दूसरे के दुख-सुख में साझीदार होते थे।

(क) एक-दूसरे के कार्यों में हाथ बँटाना, त्योहार-उत्सव साथ मनाना, बीमारी में सहायता करना — ये सब उस घनिष्ठ संबंध के प्रमाण थे।

(ख) वर्तमान समय में पड़ोस के संबंध कमज़ोर हुए हैं। शहरीकरण और व्यस्त जीवनशैली के कारण लोग एक ही इमारत में रहते हुए भी एक-दूसरे को नहीं जानते।

(ख) कारण: एकल परिवार प्रणाली, व्यक्तिवाद की बढ़ती प्रवृत्ति, मोबाइल और इंटरनेट पर अत्यधिक निर्भरता, सुरक्षा की चिंता, और व्यस्त कार्यालयी जीवन — इन सबने पड़ोस के संबंधों को कमज़ोर किया है।

उत्तर: (क) पहले पड़ोस में ममता, सहयोग और आत्मीयता से भरे घनिष्ठ संबंध थे। (ख) आज शहरीकरण, व्यस्तता और व्यक्तिवाद के कारण ये संबंध औपचारिक और दूरी वाले हो गए हैं।

प्रश्न 5

"क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस न लगती है?" अपने घर/विद्यालय के आस-पास, सार्वजनिक संसाधनों और ऐतिहासिक महत्त्व के स्थानों की स्वच्छता एवं सौंदर्य को बनाए रखने के लिए आप और आपके सहपाठी, संबंधी क्या-क्या करते हैं?

हल

निबंध में लेखक ने केले का छिलका रास्ते में फेंकने, ऐतिहासिक स्थानों पर नाम लिखने जैसे आचरणों को देश के सौंदर्य को आघात पहुँचाने वाला बताया है।

स्वच्छता के लिए किए जाने वाले कार्य: सार्वजनिक स्थानों पर कचरा डस्टबिन में डालना; प्लास्टिक का उपयोग कम करना; ऐतिहासिक स्थानों पर कुछ न लिखना, न खुरचना।

सौंदर्य बनाए रखने के लिए: विद्यालय परिसर में पौधे लगाना; श्रमदान कार्यक्रमों में भाग लेना; दूसरों को भी जागरूक करना।

सहपाठी और परिवार के साथ: 'स्वच्छ भारत अभियान' जैसी पहलों में भाग लेना; आस-पड़ोस में साफ-सफाई रखना; सार्वजनिक नल-विद्युत की बर्बादी रोकना।

उत्तर: सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता बनाए रखना, ऐतिहासिक धरोहरों को क्षति न पहुँचाना और दूसरों को भी प्रेरित करना — ये सब देश के प्रति हमारे उत्तरदायित्व हैं।

प्रश्न 6

"मैं कोई ऐसा काम न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे।" देश के सम्मान को धक्का न पहुँचे, इसके लिए क्या करें और क्या नहीं करें? अपने-अपने समूह में इसकी चर्चा कीजिए और चर्चा से उभरे बिंदुओं को प्रातःकालीन सभा में पढ़कर सुनाइए।

हल

क्या करें: ईमानदारी से अपना काम करें; देश के कानून का पालन करें; सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करें; राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करें।

क्या करें: विदेश में अच्छा व्यवहार करें ताकि भारत की छवि उज्जवल रहे; पर्यावरण की रक्षा करें; भ्रष्टाचार से दूर रहें।

क्या न करें: सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाएँ; राष्ट्रीय चिह्नों का अपमान न करें; भेदभाव और सांप्रदायिकता न फैलाएँ।

क्या न करें: झूठ, धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार न करें; देश की नकारात्मक छवि को बाहर न फैलाएँ।

उत्तर: देश के सम्मान की रक्षा के लिए — ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा, राष्ट्रीय प्रतीकों का आदर करें; अपमान, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता और नकारात्मक आचरण से बचें।

प्रश्नावली 7.4 — विधा से संवाद — निबंध की विशेषताएँ

प्रश्न 1

'निबंध' का शाब्दिक अर्थ है — 'बाँधना' (नि+बंध)। निबंध की विशेषताओं के रूप में दिए गए बिंदु हैं: विषय-केंद्रीयता, साहित्यिक सौंदर्य, संक्षिप्तता और स्पष्टता, वैयक्तिकता, विचार-प्रधानता एवं भावनात्मकता, सजीवता/चित्रात्मकता, प्रेरणात्मकता, तार्किकता। इन बिंदुओं से संबंधित संदर्भ 'मैं और मेरा देश' निबंध से खोजकर लिखिए।

हल

विषय-केंद्रीयता: पूरा निबंध 'व्यक्ति और देश के अंतःसंबंध' के एकमात्र विषय पर केंद्रित है।
साहित्यिक सौंदर्य: 'आनंद की दीवार में दरार', 'मानस में भूकंप उठा' जैसे प्रतीकात्मक और लाक्षणिक प्रयोग।
वैयक्तिकता: लेखक स्वयं अपने अनुभव से शुरू करता है — 'मैं अपने घर में जन्मा था, पला था।'
विचार-प्रधानता एवं भावनात्मकता: लालाजी और स्वामी रामतीर्थ के उदाहरणों से विचार और भाव दोनों उत्पन्न होते हैं।
प्रश्नोत्तर शैली (सजीवता): 'क्या कोई भूकंप आया था?' जैसे प्रश्न-उत्तर से निबंध में संवाद-जैसी सजीवता आती है।
तार्किकता: हर बात को तर्क और उदाहरण से सिद्ध किया गया है।

उत्तर: निबंध में विषय-केंद्रीयता, वैयक्तिकता, प्रश्नोत्तर शैली द्वारा सजीवता, लाक्षणिक भाषा से साहित्यिक सौंदर्य और तार्किक उदाहरणों से विचार-प्रधानता — ये सभी निबंध की विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दिखती हैं।

प्रश्न 2

निबंध की प्रश्नोत्तर या संवादात्मक शैली को ध्यान से देखिए — 'क्या कोई भूकंप आया था, जिसने दीवार में दरार पड़ गई? ... तो उत्तर यह है आपके प्रश्न का—'। इसी तरह की और भी अन्य विशेषताएँ इस निबंध में से छाँटकर लिखिए।

हल

प्रश्नोत्तर शैली: पूरा निबंध प्रश्न पूछ-पूछ कर उनके उत्तर देने की शैली में लिखा गया है, जैसे — 'क्या कोई भूकंप आया था?', 'मानस में भूकंप उठा था?', 'अजी, भला एक आदमी अपने इतने बड़े देश के लिए कर ही क्या सकता नहीं!'
आत्मकथात्मकता: लेखक 'मैं' का प्रयोग करते हुए अपने अनुभव बताता है।
उदाहरण-शैली: लालाजी, स्वामी रामतीर्थ, कमालपाशा जैसे वास्तविक उदाहरणों से विचार को ठोस रूप दिया गया है।
आह्वान शैली: 'अरे भाई', 'अजी', 'आपका प्रश्न' जैसे संबोधन पाठक को सीधे संवाद में जोड़ते हैं।

उत्तर: निबंध में प्रश्नोत्तर शैली, आत्मकथात्मक 'मैं', वास्तविक उदाहरण और 'अजी/अरे भाई' जैसे आह्वानात्मक संबोधन — ये सभी इसकी विशिष्ट लेखन-विशेषताएँ हैं।

प्रश्नावली 7.5 — व्याकरण की बात — संदर्भ में शब्द

प्रश्न 1

निबंध में 'दरार' शब्द के दो प्रयोग हैं: • एक दिन आनंद की इस दीवार में दरार पड़ गई। • क्या कोई भूकंप आया था, जिसने दीवार में दरार पड़ गई? इसी प्रकार निबंध में 'गाँठ' शब्द के प्रयोग — 'पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साम नहीं' — को देखिए। अब अपनी पाठ्यपुस्तक में से ऐसे अन्य शब्द छाँटकर लिखिए जो संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देते हों।

हल

'दरार' शब्द के दोनों प्रयोगों में अर्थ-भेद: पहले प्रयोग में 'दरार' भावनात्मक है — आनंद की भावना में टूटन; दूसरे प्रयोग में 'दरार' मानसिक — विचारों की दीवार में टूटन।

'गाँठ' शब्द: 'मिट्टी पर 'वंदे मातरम्' लिखना' की घटना में 'गाँठ' का अर्थ है वह बंधन जो नागरिक और देश को जोड़ता है (भावनात्मक प्रयोग), जबकि धागे में 'गाँठ' बाँधना इसका शाब्दिक अर्थ है।

अन्य शब्द जो संदर्भ के अनुसार अर्थ बदलते हैं:

'पानी' — पीने का पानी (जल); 'वह पानी-पानी हो गया' (लज्जित हो गया); 'चारों ओर पानी-पानी' (बाढ़); 'उसका पानी उतर गया' (प्रतिष्ठा खो गई)।

'रोशनी' — बल्ब की रोशनी (प्रकाश); 'उसके जीवन में रोशनी आई' (खुशी/सफलता)।

उत्तर: 'दरार', 'गाँठ', 'पानी' जैसे शब्द शाब्दिक और लाक्षणिक दोनों अर्थों में प्रयुक्त होते हैं — संदर्भ के अनुसार अर्थ बदल जाता है।

प्रश्न 2

निबंध में मिलते-जुलते भाव वाले 'शब्द-युग्म' हैं: • 'ममता-दुलार' (पहले वाक्य में) • 'भरा-पूरा' (दूसरे वाक्य में) आप इस निबंध में से मिलते-जुलते अर्थ वाले और पुनरुक्त (एक ही शब्द को फिर से कहना) शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।

हल

मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द-युग्म (निबंध से):

• ममता-दुलार (स्नेह और प्यार — दोनों एक ही भाव)

• भरा-पूरा (संपूर्ण और समृद्ध — दोनों पूर्णता के भाव)

• दुख-सुख (विपरीत भाव — दोनों जीवन के अनुभव)

• जन्मा-पला (जन्म लेना और पोषित होना — जीवन के क्रमिक चरण)

पुनरुक्त शब्द-युग्म (निबंध से):

• घूम-फिरकर (घूमना और फिरना — लगभग एक ही क्रिया)

• पूरा-पूरा (पूर्णतः — एक ही शब्द दोहराया)

• धक्का-धक्का (आघात — पुनरुक्त)

उत्तर: मिलते-जुलते: ममता-दुलार, भरा-पूरा, दुख-सुख; पुनरुक्त: पूरा-पूरा, घूम-फिरकर — ये शब्द-युग्म भाषा में जीवंतता और लय लाते हैं।

प्रश्नावली 7.6 — शब्दों की कड़ियाँ — उपसर्ग और प्रत्यय

प्रश्न 1

"मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही।" उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित शब्द 'अपूर्णता' में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग चिह्नित किया गया है। इस प्रयोग को समझकर नीचे दिए गए शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय शब्द पहचानकर लिखिए — अलौकिक, निरक्षरता, सम्मानित, अनावश्यक, अपमानित, अभिमानी शब्द — उपसर्ग — मूल शब्द — प्रत्यय अपूर्णता — अ — पूर्ण — ता

हल

अलौकिक: उपसर्ग = अ; मूल शब्द = लौकिक; प्रत्यय = इक (लोक+इक=लौकिक, अ+लौकिक)
निरक्षरता: उपसर्ग = निर्; मूल शब्द = अक्षर; प्रत्यय = ता (निर्+अक्षर+ता)
सम्मानित: उपसर्ग = सम्; मूल शब्द = मान; प्रत्यय = इत (सम्+मान+इत)
अनावश्यक: उपसर्ग = अन्; मूल शब्द = आवश्यक; प्रत्यय = (यहाँ 'आवश्यक' में 'क' प्रत्यय है, मूल = आवश्य); संक्षेप में उपसर्ग = अन्, मूल = आवश्यक, प्रत्यय = —
अपमानित: उपसर्ग = अप; मूल शब्द = मान; प्रत्यय = इत (अप+मान+इत)
अभिमानी: उपसर्ग = अभि; मूल शब्द = मान; प्रत्यय = ई/इन (अभि+मान+ई)

उत्तर: अलौकिक (अ+लौकिक), निरक्षरता (निर्+अक्षर+ता), सम्मानित (सम्+मान+इत), अनावश्यक (अन्+आवश्यक), अपमानित (अप+मान+इत), अभिमानी (अभि+मान+ई)।

प्रश्नावली 7.7 — शब्द-संपदा (शब्दार्थ मिलान)

प्रश्न 1

नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ 'प्रयोजन' में दिए गए हैं। इन्हें मिलाइए — शब्द | अर्थ संचित | — मानस | — तेजस्वी | — ठसक | — धनिक | — रसद | — दाद देना | — साक्षी | — लांछित | — हँडिया | — सुतली | — चौपाल | — सघन | — तरेड़ | — ज़ीना | —

हल

संचित — इकट्ठा किया हुआ, जमा किया हुआ, ढेर लगाया हुआ
मानस — मन, चित्त, मन से उत्पन्न, मानसरोवर, रामचरितमानस
तेजस्वी — तेजवाला, प्रतापी, शक्तिशाली, प्रभावशाली
ठसक — चाल-ढाल का बनावटीपन, जिसमें रूप, धन आदि का गर्व सूचित होता हो; ऐंठ, शान, नखरा
धनिक — धनवान, धनी, स्वामी
रसद — अनाज, खाने का सामान, भत्ता, राशन
दाद देना — न्यायोचित प्रशंसा करना, न्याय करना
साक्षी — गवाही, गवाह का बयान
लांछित — दोषयुक्त, कलंकित
हँडिया — एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन
सुतली — सन या पटसन के रेशों से बटकर बनाई हुई डोरी
चौपाल — खुली या छायी हुई मंडपाकार बैठक जहाँ गाँव के लोग बैठकर पंचायत आदि करते हों; छायादार बड़ा चबूतरा या दालान
सघन — घना, गझिन, ठोस
तरेड़ — दरार
ज़ीना — सीढ़ी, सोपान

उत्तर: संचित=इकट्ठा किया; मानस=मन; तेजस्वी=प्रभावशाली; ठसक=ऐंठ/नखरा; धनिक=धनवान; रसद=राशन/अनाज/खाने का सामान; दाद देना=न्यायोचित प्रशंसा; साक्षी=गवाही; लांछित=कलंकित; हँडिया=मिट्टी का बर्तन; सुतली=रस्सी/डोरी; चौपाल=सामूहिक बैठक का स्थान; सघन=घना; तरेड़=दरार; ज़ीना=सीढ़ी।